

डॉ. लेस्ली एलन, विलापगीत, सत्र 12, विलापगीत 5: 1-7

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन विलाप की पुस्तक पर अपनी शिक्षा देते हुए कह रहे हैं। यह सत्र 12 है, विलाप 5:1-7।

अब हम विलाप अध्याय 5 पर आते हैं, और हम केवल पहले सात छंदों का अध्ययन करेंगे। अगर मैं अंत में यह कहना भूल गया, तो क्या मैं अब कह सकता हूँ कि अगली बार, हम अध्याय 5, छंद 8 से 16 को देखेंगे? अध्याय 5 वह है जिसका हम इंतजार कर रहे थे, और दुःख के मामले में, हम एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आ गए हैं।

उस मोड़ को याद करें जिसका मैं जिक्र कर रहा हूँ। दर्द पहले की तरह ही बुरा महसूस किया जा रहा है, लेकिन एक अधिक सकारात्मक भविष्य की कल्पना की जा सकती है, और इसलिए बदलाव की दिशा में एक संकल्प है और यहाँ उस संकल्प को कैसे व्यक्त किया जाता है, यह इस तथ्य में है कि प्रार्थना में ईश्वर की ओर मुड़ना है और, निश्चित रूप से, यह कुछ ऐसा है जो संरक्षक द्वारा आग्रह किया गया है, प्रार्थना करने की आवश्यकता और फिर सिय्योन ने मण्डली के लिए एक रोल मॉडल के रूप में सिय्योन से प्रार्थना करने का आग्रह किया और फिर संरक्षक ने एक पुरुष रोल मॉडल के रूप में खुद प्रार्थना की ओर रुख किया और अध्याय 3 की शुरुआत और अंत में उन प्रार्थनाओं को दर्ज किया, और इसलिए हम इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। हमें प्रार्थना करने की आवश्यकता है, और हम यहाँ हैं।

हे प्रभु, याद रखो कि हम पर क्या बीती है। यहाँ हम प्रार्थना के बिंदु पर हैं और इसलिए स्पष्ट रूप से यह भावना है कि प्रार्थना करने का प्रयास करना सार्थक है और हम इस मानवीय स्थिति से ऊपर उठकर अपने सिर उठाने के बिंदु पर आ सकते हैं, जो कि बहुत भारी है और वास्तव में भगवान की ओर मुड़कर उनसे इस बारे में कुछ करने के लिए कह सकते हैं। अब हमारे पास कोई एक्रोस्टिक नहीं है।

अब हम हिब्रू वर्णमाला के माध्यम से नहीं जाते हैं, और हम जो भी करते हैं, उसमें हमें एक प्रकार की एक्रोस्टिक प्रतिध्वनि मिलती है जिसमें 22 छंद हैं और इसलिए 22 पंक्तियाँ इस अंतिम कविता को बनाती हैं और यह केवल एक्रोस्टिक रूप की प्रतिध्वनि है लेकिन कोई वास्तविक एक्रोस्टिक नहीं है, और कोई भी रूप-महत्वपूर्ण कारण नहीं है कि हमें इस बिंदु पर एक्रोस्टिक को क्यों छोड़ना चाहिए। यह एक प्रार्थना विलाप के लिए उपयुक्त है। भजन 25 भजनों में एक प्रार्थना विलाप है, जो एक एक्रोस्टिक है, और इसलिए शैली और साहित्य के प्रकार के संदर्भ में इस दृष्टिकोण से कोई कारण नहीं है कि एक्रोस्टिक क्यों नहीं होना चाहिए।

शायद यह बदलाव का संकेत है, कुछ अलग करना इस बात का संकेत है कि हम फिर से शुरुआत कर रहे हैं, और इसलिए जैसे कि अब केवल एक्रोस्टिक की प्रतिध्वनि है और कोई वास्तविक एक्रोस्टिक नहीं है, इसलिए हम उस मीटर को खो देते हैं जो आमतौर पर अंतिम

संस्कार के साथ होता है, वह मीटर। मीटर याद है? तीन प्लस दो, लंगड़ा मीटर। तीन, और आप पंक्ति के दूसरे भाग में तीन उच्चारण वाले सिलेबल्स की उम्मीद करते हैं, लेकिन नहीं, तीन प्लस दो, और आप एक तरह से निराशा महसूस करते हैं।

यह ध्वनि में अपने विशेष तरीके से शोक व्यक्त करता है, लेकिन अब यह तीन प्लस तीन मीटर है, जो एक बहुत ही नियमित काव्य मीटर है, लेकिन हमने वास्तव में अंतिम संस्कार विलाप को पीछे नहीं छोड़ा है। हम देखेंगे कि अंतिम संस्कार विलाप अध्याय पाँच में बहुत अधिक है, और हमने उस शोक को नहीं छोड़ा है जो पहले अंतिम संस्कार विलाप के अंतर्गत आता है, लेकिन परिवर्तन हवा में है, और नया मीटर उस परिवर्तन का जश्न मनाता है, कोई कह सकता है, लेकिन जैसा कि मैंने कहा कि यह मनोवैज्ञानिक अर्थ में समापन नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण मोड़ है, इसलिए इस अध्याय में अभी भी बहुत दर्द व्यक्त किया गया है, लेकिन दर्द को भगवान के पास लाया गया है।

इसलिए, अध्याय पाँच दर्द और पीड़ा, आशा और पीड़ा के बीच घूमता है, और उस आशा में, मण्डली द्वारा अब तक अनुभव किए गए बेहतर भविष्य के लिए प्रार्थना करने की इच्छा है। हमने पहले विलाप की पुस्तक में पाए जाने वाले विभिन्न मार्गों या प्रक्षेपवक्रों के बारे में बात की थी, दुःख, अपराधबोध और शिकायत, और वे सभी अध्याय पाँच में अभी भी मौजूद हैं, लेकिन अब वे इस नई कविता के संबंध में आगे बढ़ने के साथ संयुक्त हैं। मैं अध्याय पाँच को तीन भागों में विभाजित करता हूँ और यह हमारे अंत में तीन क्रमिक वीडियो को नियंत्रित करता है।

एक से सात और आठ से सोलहवें श्लोक, और फिर सत्रह से बाईसवें श्लोक, और इस मामले में, कविता मोटे तौर पर तीन भागों में विभाजित है। अब, मुझे उन खंडों के बारे में क्यों सोचना चाहिए? खैर, मैं सातवीं कविता को देखता हूँ, हमारे पूर्वजों ने पाप किया, वे अब नहीं रहे, और हम उनके अधर्म को सहते हैं, और मैं सोलहवीं कविता को देखता हूँ, हमारे सिर से मुकुट गिर गया है, हम पर हाय क्योंकि हमने पाप किया है, और दोनों मामलों में, पाप का उल्लेख है, अपराध का उल्लेख है। अपराध सातवीं और सोलहवीं कविता में आता है, और मैं इसे एक तरह के परहेज के रूप में लेता हूँ जो कविता की संरचना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, और इसलिए मैं एक से सात, आठ से सोलह, और फिर सत्रह से बाईसवीं कविता के संदर्भ में सोचना चाहता हूँ।

हम अध्याय पांच को प्रार्थना विलाप के रूप में चित्रित करते हैं, और यह सच है, लेकिन यह एक अजीब प्रार्थना विलाप है क्योंकि इसमें एक और शैली भी शामिल है, हमारा पुराना दोस्त, एक अंतिम संस्कार विलाप। वास्तव में, यह, निश्चित रूप से, बल्कि अजीब है क्योंकि एक अंतिम संस्कार विलाप अपने स्वभाव से मूल रूप से धर्मनिरपेक्ष था। यह सिर्फ इंसानों की मानवीय परिस्थितियों के बारे में बात कर रहा था, जिस पर काम करने की जरूरत थी, लेकिन मानवीय स्तर पर रहना और फिर उस प्रार्थना के विपरीत, हम ईश्वर से अनिवार्य रूप से आध्यात्मिक संबंध के बारे में सोचते हैं, और इसलिए उन दो दृष्टिकोणों, इन दो शैलियों के बीच अंतर है जो अब तक पुस्तक में चले आ रहे हैं। लेकिन यहाँ, वे एक तरह से एक साथ दिखाई देते हैं जो आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि अंतिम संस्कार विलाप और प्रार्थना विलाप दोनों ही आपदा से जुड़े हैं, और इसलिए उनका समग्र विषय एक ही है।

और फिर हमने अपने पाठ्यक्रम में बहुत पहले ही देखा कि वे दोनों पुराने नियम में शोक अनुष्ठानों से जुड़े हुए हैं। आप शोक अनुष्ठान पाते हैं, विशेष रूप से अंतिम संस्कार विलाप में, लेकिन भजन संहिता में भी, आपको विभिन्न प्रकार के शोक अनुष्ठानों के संदर्भ मिलते हैं। और फिर, निश्चित रूप से, विलाप 1:3 में, जब हम अंतिम संस्कार विलाप से निपट रहे थे, तब भी हम आपदा की एक धार्मिक व्याख्या को चुपके से आते हुए पा रहे थे, और हम प्रार्थना विलाप में प्राथमिकता के करीब पहुँच रहे हैं।

बेशक, विलापगीत 5 उससे भी आगे जाता है। साथ ही, हमारे पास प्रार्थना और अंतिम संस्कार विलाप है। प्रार्थना अनिवार्य रूप से भगवान को संबोधित है और इसमें भगवान का दूसरे व्यक्ति द्वारा उल्लेख किया गया है।

इस अध्याय में हम इसे कहाँ पाते हैं? हम इसे पद 1 में पाते हैं और फिर हमें लंबे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। हम इसे फिर से पद 19 से 22 में पाते हैं। तो वास्तव में एकमात्र प्रार्थना एक तरह के ढाँचे में है, एक रूपरेखा, पूरे अध्याय के लिए एक ढाँचा।

1 शुरुआत में, 19 से 22 अंत में और बताए गए हैं। लेकिन वास्तव में ये ही एकमात्र प्रार्थना तत्व हैं जो परमेश्वर को संबोधित हैं। बीच में, हमारे पास 2 से 18 तक की आयतें हैं, और अब परमेश्वर के लिए कोई दूसरा व्यक्ति संदर्भ नहीं है, केवल पहले बहुवचन वाले ही मण्डली को संदर्भित करते हैं।

और इसलिए वे वहाँ हैं। यह चारों ओर लपेटा हुआ है, और प्रार्थना एक अंतिम संस्कार विलाप के चारों ओर लिपटी हुई है। और इसलिए यह कुछ ऐसा है जो भजन विलाप में नहीं होता है, कि हम इस पर जोर देते हैं।

अब प्रार्थना विलाप में जो कुछ होता है वह संकट का वर्णन होता है। और आमतौर पर यह संकट का एक छोटा सा वर्णन होता है, तुलनात्मक रूप से, प्रार्थना विलाप के समग्र आकार की तुलना में। लेकिन यहाँ इस मानवीय स्थिति के बारे में बात करने के लिए बहुत जगह दी गई है।

श्लोक 2 से 18 तक, हमारे पास 17 श्लोक हैं। अध्याय 5 का अधिकांश भाग अंतिम संस्कार विलाप से बना है। लेकिन निश्चित रूप से, यह केवल अंतिम संस्कार विलाप नहीं है, यह भगवान से बोला गया अंतिम संस्कार विलाप है, जिसे बपतिस्मा दिया जाता है, कोई कह सकता है, आलोचनात्मक रूप से बोलते हुए, क्योंकि जिस भगवान को शुरुआत में, अंत में संबोधित किया गया है, वह अभी भी श्लोक 2 से 18 में श्रोता होने का मतलब है, जो एक मानवीय संदर्भ में बोले गए हैं और काफी धर्मनिरपेक्ष तरीके से पढ़े गए हैं।

लेकिन यहाँ, अंतिम संस्कार विलाप को अध्याय 5 में परमेश्वर के समक्ष अनोखे ढंग से लाया गया है। तो वहाँ यही हो रहा है, और यह काफी अजीब है। वास्तव में, इसका मतलब है कि अध्याय 5 दो मिशनों का सबूत है जो गुरु के लिए पूरे किए गए हैं। हम हमेशा से यही कहते आए हैं कि प्रार्थना पर जोर दिया गया है।

आपको इसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए। आपको इसके बारे में प्रार्थना करनी चाहिए। इसे विभिन्न कोणों से संबोधित किया जाता है, और सभी प्रकार के कारण बताए जाते हैं कि लोगों को प्रार्थना करने की आवश्यकता क्यों है।

हमने पहले देखा है कि सिध्दोन एक आदर्श उदाहरण है। सिध्दोन प्रार्थना करता है, और मण्डली को अंततः खुद ऐसा करने की आवश्यकता है, और वे यहाँ ऐसा करते हैं। और फिर, अध्याय 3 की शुरुआत और अंत में प्रार्थना की वे गवाहियाँ, वहाँ वह पुरुष आदर्श उदाहरण था, स्वयं गुरु, जिसने प्रार्थना की, और निहितार्थ यह था, संकेत, संकेत, यही वह है जो आपको भी करने की आवश्यकता है।

और इसलिए, यह बहुत ज़रूरी है कि प्रार्थना का आह्वान आखिरकार सुना जाए। लेकिन साथ ही, हमने अंतिम संस्कार के विलाप पर भी ज़ोर दिया है, और मेंटर मानते हैं कि मनोवैज्ञानिक रूप से, उन्हें इन कठिन प्रक्रियाओं से गुज़रना पड़ता है। और यह बहुत लंबी है, और इसमें बहुत ज़्यादा शामिल है।

शायद, गुरु ने जितना सोचा था, उससे ज़्यादा समय लगा। शायद गुरु ने अपनी योजना बनाते समय सोचा होगा कि एक बार जब वह तीसरी कविता के अंत तक पहुँच जाएगा, तो वह अध्याय 5 पर आगे बढ़ सकता है। लेकिन जब प्रार्थना शुरू होने वाली थी, ओह नहीं, ओह नहीं। या जब शायद उसने लोगों का साक्षात्कार लिया, ओह नहीं, उन्हें इससे ज़्यादा की ज़रूरत थी।

और इसलिए, अध्याय 4 आवश्यक था, अभी भी उस अंतिम संस्कार विलाप प्रकार की बात को जारी रखना। और इसलिए, यह बहुत आवश्यक था। और शोक में दोनों ही करने की आवश्यकता होती है।

शोक मना रहे विश्वासियों के रूप में, हमें भी इन दुःख प्रक्रियाओं से गुज़रना पड़ता है, और हमें भी, अंततः परमेश्वर के पास आना पड़ता है और परमेश्वर से संबंध बनाना पड़ता है। बेशक, इस स्थिति में, यह ज़रूरी था क्योंकि वहाँ अपराधबोध का कारक था, और परमेश्वर के साथ संबंध टूट गया था। इसलिए, उन्हें वापस जाना पड़ा।

उन्हें भगवान के पास वापस जाना था, और उन्हें उस सुलह में वह हिस्सा निभाना था। लेकिन प्रार्थना हमेशा ज़रूरी होती है, और दुःख हमेशा भगवान के साथ मिलकर खत्म होना चाहिए और एक बार फिर भगवान से जुड़ना चाहिए। और इसलिए, यही वहाँ हो रहा है।

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध मूलतः कमज़ोर हो चुका है। आपको इस नवीनीकरण को बढ़ावा देने की ज़रूरत है। आपको अपनी तरफ़ से उस सम्बन्ध के नवीनीकरण की पहल करनी होगी, और मण्डली को उस सत्य को स्वीकार करना होगा।

और इसलिए, अध्याय 5 में, शैली के संदर्भ में यह उल्लेखनीय संकर है। एक प्रार्थना विलाप जो सख्ती से शुरुआत और अंत में केवल एक प्रार्थना विलाप है, लेकिन इसमें शामिल है, प्रार्थना विलाप अपनी बाहों को चारों ओर रखता है, जैसे कि यह उस दुःख को लपेटता है और इसे

भगवान के लिए एक पार्सल के रूप में लाता है। हमें ऐतिहासिक सेटिंग के बारे में कुछ कहना चाहिए।

जब हम अध्याय 1, 2 और 4 को देख रहे थे, तो हमें पता था कि हम कहाँ हैं। हम घेराबंदी की स्थिति में वापस आ गए थे, और हम उन यादों को फिर से जी रहे थे जिनसे लोगों को गुजरना पड़ा था। और अक्सर, दुःख यादों, यादों और यादों का विषय होता है।

दरअसल, अतीत को याद करना आगे बढ़ने का एक तरीका है। यह उस भयानक डंक पर काबू पाने का एक तरीका है, जो पीड़ादायक दर्द है, जब कोई इसे बार-बार दोहराता है। आप इसे एक तरह से कमजोर कर देते हैं, और आप जो हुआ उसे आत्मसात करने और उससे बाहर निकलने में सक्षम हो जाते हैं।

इसलिए, दुःख अनिवार्य रूप से अतीत की घटनाओं से संबंधित है। घटनाएँ अतीत में हैं, लेकिन वे हमारे दिमाग में जीवित रहती हैं। वे इतने लंबे समय से ब्रेकिंग न्यूज़ रही हैं कि हम उनके बारे में सोचने में पागल हो जाते हैं। एक शोक विशेषज्ञ ने कहा कि जो व्यक्ति शोक मनाता है, उसके लिए यह समझना मुश्किल है कि दूसरे लोगों की घड़ियाँ अलग समय दर्ज करती हैं।

हम अभी भी अतीत में बहुत पीछे हैं, लेकिन दूसरे लोगों की घड़ियाँ घंटे दर घंटे आगे बढ़ती रहती हैं, जबकि हम वही बने हुए हैं, और हमारी घड़ी मानो रुक गई है। और ऐसा ही हुआ। और इसलिए, मण्डली के लिए, पीड़ा जारी रही, लेकिन वे अतीत में जो कुछ हुआ था, उससे ग्रस्त थे।

लेकिन अध्याय तीन में एक बदलाव हुआ, और जब गुरु ने दुख के बारे में बात की, तो वह वर्तमान में, युद्ध के बाद की स्थिति में, दुश्मन के कब्जे में चले गए। और हमने अध्याय तीन में दो जगहों पर देखा कि यह सामने आता है। और अब, फिर से, यह ऐतिहासिक सेटिंग है।

घेराबंदी अतीत में है, और मानो लोग कह रहे हों, हमने सोचा कि यह बहुत बुरा था, लेकिन हमारा वर्तमान दुख जारी है। हम सिर्फ अतीत के दुखों को याद नहीं कर रहे हैं। हम युद्ध के बाद के अनुभव में अपने कब्जे वाले देश में अपने भौतिक अनुभव में फिर से पीड़ित हैं, और इसने नए दुख लाए हैं।

हमने अध्याय तीन, श्लोक 34 से 36 और 51 में देखा था, और इसे गुरु द्वारा उठाया गया था, लेकिन अब हम अध्याय पांच में इसके बारे में विस्तार से जानते हैं, एक कब्जे वाले देश में रहते हुए। यहूदा एक वास्तविक जेल शिविर था, और दुश्मन हर जगह था और सख्त नियंत्रण में था। और इसलिए, पाठ अतीत, अतीत की पीड़ा से वर्तमान, वर्तमान पीड़ा की ओर मुड़ता है।

क्या यह गुरु के लिए एक प्रशंसा थी कि वे अपने पिछले दुखों से उबर सकते थे और अब वे इससे इतने प्रभावित नहीं थे? खैर, मैं इतना निश्चित नहीं हूँ क्योंकि जब आप श्लोक 18 पर आते हैं, तो आप फिर से अतीत को देखते हैं, और श्लोक 18 में, इन लोगों की सबसे बड़ी चिंता क्या है? उन्हें सबसे ज्यादा क्या निराश कर गया? श्लोक 18, सियोन पर्वत के कारण, जो उसके ऊपर उजाड़ पड़ा है। इसलिए, वे पीछे की ओर सोच रहे हैं, वे उस शहर में हैं, शायद पुराने मंदिर के खंडहर

प्रांगण में, लेकिन वे वहाँ हैं, और वे चारों ओर देखते हैं, और वे सोचते हैं, सिंथोन गिर गया है। सिंथोन गिर गया है।

यह कैसे हो सकता है? और इसलिए, वे उस स्थिति के बारे में सोच रहे हैं, न केवल एक कब्जे वाले देश में रहने की उनकी वर्तमान स्थिति के बारे में, बल्कि इससे पहले जो हुआ था, यरूशलेम का पतन और विनाश। इसलिए, यह अभी भी मण्डली की सोच में एक भूमिका निभाता है, और हमें आश्चर्य नहीं है। वैसे भी, कहने के लिए और भी बहुत कुछ था, और यह उनका वर्तमान वस्तुनिष्ठ अनुभव था जो मुख्य रूप से स्मृति के संदर्भ में दुःख के उनके व्यक्तिपरक अनुभव के बजाय सामने आया।

हमें प्रार्थना के बारे में सोचना चाहिए। प्रार्थना, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, प्रार्थना का अर्थ है अनुनय। भजन संहिता में बताया गया है कि प्रभावी होने के लिए, यह परमेश्वर को अनुनयित करना है।

प्रभावी होने के लिए, प्रार्थना को परमेश्वर के समक्ष एक अच्छा, उचित मामला प्रस्तुत करना चाहिए। भजन संहिता में प्रार्थना विलाप हमेशा एक अच्छा मामला प्रस्तुत करता है, और एक कीवर्ड एक छोटा संयोजन है, जो प्रेरणा प्रदान करता है। हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दें, हमें बचाएँ, क्योंकि, के लिए, और आप एक कारण देते हैं।

और इस तरह, आप परमेश्वर के सामने एक ठोस मामला बनाते हैं कि आपको क्यों जवाब देना चाहिए कि परमेश्वर को उस प्रार्थना का उत्तर क्यों देना चाहिए। अध्याय पाँच वास्तव में परमेश्वर के लिए प्रेरणाओं की एक श्रृंखला है, कारणों की एक श्रृंखला है कि उन्हें उसकी मदद की आवश्यकता क्यों है। केवल परमेश्वर की मदद से ही वे एक नई शुरुआत कर सकते हैं।

और मुझे लगता है, मैं भी इस बारे में सोचता हूँ, एल्कोहॉलिक्स एनोनिमस का मॉडल, वह बारह-चरणीय कार्यक्रम, यह हमें इस तथ्य को समझाने का एक उपयोगी तरीका है कि ईश्वर की ओर मुड़ना, उस उच्च शक्ति की ओर मुड़ना हमारी मानवीय स्थिति में दयनीयता को दूर करने के लिए बहुत आवश्यक है। अब, जहाँ तक एल्कोहॉलिक्स एनोनिमस का सवाल है, मदद के लिए ईश्वर या उच्च शक्ति पर बहुत अधिक निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन शराब की लत ज्वलंत मुद्दा है।

यही संकट है। और यह आश्वासन दिया गया है कि भगवान शराबी को ठीक होने में मदद करने के लिए मौजूद हैं। और यह अध्याय पाँच में सच है।

यह गुरु की सोच में सच है कि ईश्वर मदद करने के लिए मौजूद है। यह बिलकुल सच है। लेकिन विलाप में स्थिति के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है, खासकर अध्याय पाँच में, लेकिन यह पहले ही संकेत दिया जा चुका है कि असली ज्वलंत मुद्दा आध्यात्मिक है, धार्मिक है, ईश्वर के साथ संबंध, वह वाचा संबंध जिसने इस्राएल को अन्य सभी राष्ट्रों से अलग किया, यह वास्तव में ज्वलंत मुद्दा था।

और 586 उस वाचा सम्बन्ध के विघटन को दर्शाता है। और इसलिए, प्रार्थना में चरमोत्कर्ष याचिका पद 21 में होने जा रही है। हे प्रभु, हमें अपने पास वापस लौटा लो।

हमें अपने पास वापस ले आओ। और यह एक बड़ा मुद्दा है जिसे हल करने की ज़रूरत है। और यही प्रार्थना का सार है, वास्तव में।

लेकिन परमेश्वर को मनाने के लिए, वे अपना दयनीय मामला उसके पास लाते हैं, और वे न्यायाधीशों के सामने अपनी स्थिति का बचाव करते हैं, कि उन्हें क्यों मदद की ज़रूरत थी और साथ ही साथ परमेश्वर के साथ उस रिश्ते में वापस क्यों लाया जाना चाहिए। ठीक है, तो हमें यहाँ अंतिम संस्कार विलाप और प्रार्थना का एक संयोजन मिलता है, और यह सब परमेश्वर के सामने मामला पेश करने, उन्हें उनकी ओर से हस्तक्षेप करने के लिए राजी करने की एकीकृत भूमिका निभाता है। और इसलिए अब, हम इन पहले सात छंदों के अलग-अलग हिस्सों के अलग-अलग विवरणों पर आते हैं।

आपके पास पहले पद में यह प्रत्यक्ष प्रार्थना है जो स्वर निर्धारित करती है। पूरे पद में प्रार्थना का भाव है, सब कुछ ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत है। और इसकी शुरुआत, याद रखें, याद रखें से होती है।

और यह ईश्वर से सावधान रहने की अपील है। और वास्तव में, यह कह रहा है, हे ईश्वर, हमें अनदेखा मत करो। लेकिन एक सक्रिय स्मृति के लिए अपील है जो उस चीज़ को प्राथमिकता देती है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

और इसलिए कृपया इस पर ध्यान दें। यह वास्तव में इस देखो और देखो के समानांतर है, जो हमें इस पहले श्लोक में भी मिला है। याद करो, हे प्रभु, हम पर क्या बीती है, देखो और हमारी बदनामी को देखो।

याद रखें, यह प्रार्थना विलाप का एक बहुत बड़ा हिस्सा है, और हम कई बार इसमें शामिल होते हैं। इसका एक उदाहरण भजन 25 में है, और यह वहाँ की सातवीं आयत में है, 25:7। मेरी जवानी के पापों या मेरे अपराधों को याद मत करो।

, अपने अटल प्रेम के अनुसार, अपनी भलाई के लिए मुझे याद रख। यह अध्याय तीन जैसा ही लगता है, है न? अटल प्रेम और भलाई। लेकिन मुझे याद रख, यह भगवान से ध्यान देने की अपील है।

और फिर आप सभी कारण बताते हैं कि उसने आप पर ध्यान क्यों दिया, क्यों देना चाहिए, क्यों दिया। और यह पंक्ति के पहले भाग में बहुत सामान्य शब्दों में उल्लेख किया गया है कि हमारे साथ क्या हुआ है। लेकिन फिर, हमारी बेइज्जती देखिए।

देखो और देखो, बेशक, वे गुरु की बात सुन रहे होंगे, और वे सिखों की बात सुन रहे होंगे, क्योंकि यही वह याचिका का रूप था जिसे वे अपनी प्रार्थनाओं में लेकर आए थे। और इसलिए, देखो और देखो, देखो और इसके बारे में कुछ करो। और यही उन्होंने प्रार्थना की।

लेकिन यह दिलचस्प है कि वे अपमान के संदर्भ में गलत क्या है, इसका सारांश देते हैं। अपमान। और अपमान तत्काल, वस्तुगत पीड़ा, शारीरिक पीड़ा नहीं है।

यह व्यक्तिपरक पीड़ा है। यह मनोवैज्ञानिक पीड़ा है। याद रखें कि हमने पहले शोक, अपमान और सम्मान की हानि में माध्यमिक पीड़ा के बारे में बात की थी।

और यह वस्तुगत स्थिति से भी बदतर या उससे भी बदतर हो सकता है। और इसलिए, यह भावनाओं, मनोवैज्ञानिक भावनाओं का मामला है जो भगवान के सामने लाई जाती हैं। ओह, हम बहुत दुखी महसूस करते हैं, भगवान।

हम खुद को कितना बेकार समझते हैं। देखिए और हमारी बदनामी देखिए। और वे मानव मानसिकता को सुधारना चाहते हैं।

वे एक बार फिर अपने मन और दिल से स्वस्थ होना चाहते हैं। यही उनकी सभी शारीरिक समस्याओं का मुख्य कारण है। इसलिए, यह एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है।

वे खुद को भगवान के सामने दुखी और जरूरतमंद लोगों के रूप में पेश करते हैं, इस उम्मीद में कि वह पीड़ितों के रूप में मण्डली के लिए वास्तव में खेद व्यक्त करेंगे, जो भावनात्मक रूप से और साथ ही बाहरी रूप से पीड़ित हैं। और इसलिए, यह अनिवार्य शब्दों, इस शब्द, अपमान के लिए एक प्रेरक बैकअप है। और इसलिए, हम यहाँ हैं।

हम इस पहले भाग में आते हैं, पद 1 से 7 तक, और पथों, मार्गों, दुःख, शिकायत और अपराध बोध को देखते हैं। खैर, हम पद 7 में अपराध बोध पर आते हैं, जो इस पहले भाग का चरमोत्कर्ष है। हमारे पूर्वजों ने पाप किया, वे अब नहीं रहे, और हम उनके अधर्म को सहते हैं।

और इसलिए, वहाँ अपराधबोध का उल्लेख है जिस पर हमें कुछ विस्तार से विचार करना होगा। और फिर, वहाँ दुःख का उल्लेख होगा, सामान्य जीवन के नुकसान के उदाहरण, आक्रमण से पहले जिस तरह का जीवन वे भोगते थे। यह अतीत की बात थी।

हमें याद है कि दुःख मुख्य रूप से नुकसान से जुड़ा है, जो चीजें खो गई हैं, और एक पूरी श्रृंखला खो गई है। और श्लोक 2 से 6 में इन नुकसानों की एक सूची दी गई है। शिकायत, दुःख और नुकसान की ये अभिव्यक्तियाँ भी एक शिकायत के रूप में कार्य करती हैं। शिकायत दुश्मन के कब्जे के बारे में है, क्योंकि यह दुश्मन का कब्जा है जो उन नुकसानों के लिए लाया जाता है।

और यह बहुत बड़ा है। जैसा कि हम इस पहले भाग में देखते हैं, दुख और शिकायत एक दूसरे के बहुत साथी या जुड़वाँ हैं। अब, हम अपने कारणों और अलग-अलग प्रेरणाओं पर आते हैं, भले ही हमें कोई कारण या कारण न मिले।

हम श्लोक 2 पर आते हैं, और हमारी विरासत अजनबियों को सौंप दी गई है, हमारे घर विदेशियों को सौंप दिए गए हैं। विरासत एक बहुत ही भारी शब्द है, और इसका मतलब यही है। यह भूमि

के लिए उलट है, और आप भूमि के धर्मशास्त्र की जांच किए बिना पुराने नियम के धर्मशास्त्र का अध्ययन नहीं कर सकते।

यहाँ, इसे एक मजबूत क्षेत्रीय परंपरा के रूप में प्रस्तुत किया गया है, लेकिन इसका एक धार्मिक आधार है। मानवीय रूप से कहें तो, भूमि का उद्देश्य पीढ़ियों तक परिवार में रहना था, पिता से बेटे को, पोते को, और इसी तरह आगे बढ़ना था। लेकिन हर कोई जानता था कि यह मूल रूप से भगवान द्वारा जनजातियों को दिया गया था, जो कुलों में विभाजित हो गए, जो परिवारों में विभाजित हो गए, और यही होना था।

लेकिन श्लोक 2 क्या कहता है? हमारी विरासत अजनबियों को दे दी गई है, हमारे घर विदेशियों को दे दिए गए हैं। जब हम विरासत और खोई हुई विरासत के बारे में सोचते हैं तो एक महत्वपूर्ण अंश है, और मुझे 1 राजा और अध्याय 21 याद आता है। यह उत्तरी राज्य में राजा अहाब के साथ एलिय्याह की मुठभेड़ की कहानी है।

महल के बगल में, अहाब ने अपनी खिड़की से बाहर देखा और बगल में एक सुंदर अंगूर का बाग देखा, और वह उस अंगूर के बाग को पाने के लिए लालायित हो गया। उसने कहा, ओह, यह मेरे लिए एक बढ़िया बगीचा बन सकता है। काश यह मेरे पास होता।

काश यह मेरे पास होता। लेकिन नहीं, यह मेरा नहीं है। मैं इसे नहीं ले सकता।

और इसलिए, हम 1 राजा 21 में पढ़ते हैं, नाबोत के पास सीरिया के राजा अहाब के महल के बगल में यिज़्रेल में एक दाख की बारी थी। अहाब ने नाबोत से कहा, मुझे अपनी दाख की बारी दे दो ताकि मैं इसे सब्जी के बगीचे के रूप में इस्तेमाल कर सकूँ क्योंकि यह मेरे घर के पास है। मैं तुम्हें इसके बदले में एक बेहतर दाख की बारी दूँगा, या अगर यह तुम्हें अच्छा लगे, तो मैं तुम्हें इसका मूल्य और पैसा दूँगा।

लेकिन नाबोत ने अहाब से कहा, "यहोवा न करे कि मैं तुझे अपना पैतृक भाग दूँ।" अहाब नाराज़ और उदास होकर घर चला गया, क्योंकि यिज़्रेली नाबोत ने उससे कहा था, "मैं तुझे अपना पैतृक भाग नहीं दूँगा।"

वह अपने बिस्तर पर लेट गया, अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया, और खाना नहीं खाया। और वह वहाँ है, उदास। यह सब ठीक है।

रानी उससे मिलने आई। क्या हुआ, मेरे प्यारे? क्या हुआ? और वह उसे बताता है कि क्या हुआ। ओह, चिंता मत करो, मेरे प्यारे।

मैं तुम्हारे लिए इसे प्राप्त करने की व्यवस्था करूँगा। और यह स्पष्ट था। जवाब इज़ेबेल के लिए स्पष्ट था।

सोर के राजा की बेटी थी। और सोर का राजा एक तानाशाह था। राजा जो चाहता था, वह पा सकता था।

और यह पिता की तरह बेटी की तरह था। और इसलिए मैं इसकी व्यवस्था करूँगा। और इसलिए उसने भगवान और राजा को शाप देने के झूठे आरोपों की व्यवस्था की, नाबोत को पत्थर मारकर मार डाला गया।

यह रहा। और इसलिए, अब आप इसे ले सकते हैं। यह आपके लिए है, मेरे प्रिय।

तो समस्या यहीं खत्म हो गई। अरे नहीं, ऐसा नहीं है। एलिय्याह आता है, परमेश्वर के नाम से बोलता हुआ।

और वह उसके खिलाफ ईश्वर की ओर से एक भयानक न्याय की भविष्यवाणी करता है। वह कहता है कि तुम अपनी ज़मीन खो दोगे। नहीं, मैं यहाँ दूसरे पाठ पर जा रहा हूँ।

क्योंकि मीका के अध्याय दो में, हमारे पास ज़मीन खोने की ऐसी ही स्थिति है। और ये अमीर लोग थे जो खेतों का लालच कर रहे थे और उन्हें हड़प रहे थे और घर के मालिकों और घर और लोगों को उनकी विरासत में सता रहे थे। परमेश्वर भविष्यवक्ता मीका के माध्यम से कहता है, तुम अपनी ज़मीन खो दोगे क्योंकि तुमने दूसरों की ज़मीन छीनने की हिम्मत की।

और इसलिए, यह स्पष्ट रूप से एक बहुत गहरी शिकायत है। और यह एक मानवीय शिकायत है, लेकिन इसमें धार्मिक पहलू भी हैं। हमारी विरासत को सौंप दिया गया है।

घर और ज़मीन विदेशी सैनिकों के इस्तेमाल के लिए जब्त कर ली गई है। फिर, तीसरी आयत में, हम अनाथ और अनाथ हो गए हैं। हमारी माताएँ विधवाओं की तरह हैं।

और हमारे पास एक उपमा है, और हमारे पास एक रूपक है, और हमारे पास एक उपमा है। यह विधवा के प्रयोग जैसा है जो हमने अध्याय एक में पाया है। यह समाजशास्त्रीय है।

यह विचार उन लोगों की निम्न सामाजिक स्थिति के बारे में है जो विधवा और अनाथ हैं। और इसलिए, हम ऐसे ही हैं। हमने अपनी प्रतिष्ठा खो दी है।

हम अब स्वतंत्र नागरिक नहीं हैं। हम उन लोगों के अधीन हैं जो ज़मीन पर कब्ज़ा कर रहे हैं। हम सामाजिक रूप से कमज़ोर हैं।

हमने अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा खो दी है क्योंकि हम दुश्मन के कब्जे में हैं। और फिर, चौथी आयत में, हमें पीने के पानी के लिए भुगतान करना होगा, और हमें जो लकड़ी मिलती है उसे खरीदना होगा। यह एक नई स्थिति थी, जाहिर है, क्योंकि कब्जेदारों द्वारा पानी और लकड़ी पर भारी कर लगाया गया था, जिसकी आवश्यकता खाना पकाने के लिए आग जलाने के लिए होती थी।

और अब पहले की तरह मुफ्त पहुंच नहीं रही। भूमि की संपत्ति अब लोगों को स्वतंत्र रूप से उपलब्ध नहीं थी। इसलिए, यह एक बार फिर भूमि से जुड़ी शिकायत है।

और क्योंकि यह भूमि से जुड़ा हुआ है, इसलिए वहां यह धार्मिक पूर्वधारणा है कि ईश्वर स्वयं इस स्थिति से प्रभावित होना चाहिए। और मैं इस तरह की आयत के बारे में सोचता हूँ, मैं व्यवस्थाविवरण के अध्याय आठ में आयतों और व्यवस्थाविवरण के अध्याय आठ में आयत सात से दस के बारे में सोचता हूँ। प्रभु, तुम्हारा परमेश्वर, तुम्हें एक अच्छे देश में ले जा रहा है, एक ऐसा देश जिसमें बहती हुई नदियाँ हैं, झरने और भूमिगत जल है, घाटियों और पहाड़ियों में बहता हुआ, गेहूँ और जौ, दाखलताओं और अंजीर के पेड़ों और अनारों का देश, जैतून के पेड़ों और शहद का देश, एक ऐसा देश जहाँ तुम बिना किसी कमी के रोटी खा सकते हो, जहाँ तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं होगी, एक ऐसा देश जिसके पथर लोहे के हैं और जिसकी पहाड़ियों से तुम तांबा निकाल सकते हो।

और यह उस अच्छी ज़मीन के बारे में बात करता है जो ईश्वर ने आपको दी है। लेकिन अब यह उनकी ज़मीन नहीं थी जिस पर वे हमेशा से ही कब्जा करते आए हैं। अब, यह कब्जा करने वालों पर निर्भर था कि वे किन शर्तों के तहत इस ज़मीन और यहाँ की संपत्तियों, पानी और लकड़ी का आनंद ले सकते हैं।

इसलिए, पद दो और पद चार में धार्मिक निहितार्थ हैं और अच्छे कारण हैं कि क्यों भगवान को उनके साथ जो हुआ है उसे गंभीरता से लेना चाहिए क्योंकि, एक तरह से, यह उनके साथ भी हुआ है, और भगवान इस स्थिति में इस बदलाव से प्रभावित हैं और इसलिए ये भगवान को उनका पक्ष लेने के लिए राजी करने के तरीके हैं। पद पाँच, हमारी गर्दन पर जूआ होने से हम कठोर हो जाते हैं, हम थक जाते हैं, हमें कोई आराम नहीं दिया जाता है। नए RSV में हिब्रू में एक शब्द जोड़ा गया है जिसका अनुवाद एक जूआ, हमारी गर्दन पर जूआ के साथ किया गया है और यह एक प्राचीन संस्करण में परिलक्षित होता है और इसका लाभ यह है कि यह हमारी गर्दन पर, हमारी गर्दन पर जूआ के साथ अर्थ रखता है।

एनआईवी में यह शब्द नहीं जोड़ा गया है, और इसके बजाय, इसमें एक तरह का पैराफ्रेस है, जो हमारा पीछा करते हैं, वे हमारे पीछे पड़े हैं। वे हमारे करीब हैं। वे पीछा कर रहे हैं। वे हमारे इतने करीब हैं, वे हमारे पीछे पड़े हैं। और इसलिए हमारी गर्दन पर एक तरह से पैराफ्रेस किया गया है कि वे हमारे पीछे पड़े हैं, और यह कुछ हद तक समझ में आता है। वास्तव में, मुझे लगता है कि यह जबरन श्रम के बारे में बात कर रहा है, चाहे आप एनआईवी या एनआरएसवी को देखें। पीछा किए जाने की यह बात, मुझे लगता है कि नया आरएसवी एक विस्तारित अर्थ के बारे में सोचने में सही है, हम कठोर परिश्रम कर रहे हैं, हम अपने कार्यपालकों द्वारा कठोर परिश्रम कर रहे हैं जो हमें कड़ी मेहनत करवाते हैं। वे हमारी गर्दन पर साँस ले रहे हैं, वे हमारे इतने करीब हैं, वे हमारी गर्दन पर साँस ले रहे हैं। अनिवार्य रूप से, यह जबरन श्रम से निपटना है जो कब्जे वाले लोगों को करने के लिए लगाया जाता है।

मैं इसके अनुरूप हूँ, हम थके हुए हैं, हमें कोई आराम नहीं दिया जाता है। परंपरागत रूप से, यहूदी इस्राएली सप्ताह में छह दिन काम करते थे, लेकिन अब स्पष्ट रूप से सात दिन, चलो, काम पर वापस लौटो। काम करना है, और उन्हें आराम करने की अनुमति नहीं थी। और इसलिए,

सात दिन वे काम करते रहे, काम करते रहे, काम करते रहे, हम थके हुए हैं। हमें कोई आराम नहीं दिया गया, और हम वहीं हैं।

यह एक धार्मिक मुद्दे की ओर थोड़ा इशारा करता है: सातवें दिन छह दिन का सामान्य श्रम, जो आमतौर पर सब्त के दिन विश्राम होता है। और इसलिए, यह भगवान का अपमान है, कोई कह सकता है, इसलिए एक बार फिर, यह एक प्रेरक मुद्दा है, यहां तक कि जहां भगवान का संबंध है। लेकिन फिर, हम इन अंतिम छंदों पर आते हैं, जो मुझे लगता है कि एक दूसरे से बहुत करीब से जुड़े हुए हैं: हमने पर्याप्त रोटी पाने के लिए मिस्र और अशशूर के साथ एक समझौता किया है, हमारे पूर्वजों ने पाप किया, वे अब नहीं रहे, और हम उनके अधर्म को सहन करते हैं।

मुझे लगता है, यहाँ फिर से, हमें काल, अंग्रेजी काल का प्रश्न मिलता है, और यहाँ पद 6 में, हमने एक परिपूर्ण समझौता किया है, मुझे लगता है कि वास्तव में यह अतीत, एक पिछली स्थिति को देख रहा है। एनआईवी इसे सामने लाता है, हमने पर्याप्त रोटी पाने के लिए मिस्र और अशशूर को प्रस्तुत किया। हमारे पूर्वजों ने पाप किया और अब नहीं रहे, और हम उनकी सजा भुगत रहे हैं। यह जो कह रहा है वह पिछली पीढ़ी में स्थापित मूल है, और जब यह पूर्वजों की बात करता है, तो यह कई, कई शताब्दियों पहले या यहाँ तक कि कई, कई दशकों पहले की बात नहीं कर रहा है। यह काफी हाल का अतीत है, हिब्रू में केवल पिता शब्द का उपयोग किया जाता है, जिसके संदर्भ के अनुसार कई अर्थ हैं, पूर्वज।

मैं यहूदा के राजनीतिक अनुभवों में पहले के समय के बारे में सोच रहा हूँ जब इस्राएल और यहूदा में अकाल पड़ा था। वे हमेशा अकाल का सामना कर रहे थे, यह बस हुआ और आपको विदेश से भोजन आयात करने की आवश्यकता थी।

और इसलिए, ठीक है, विदेशी शक्तियों के साथ आर्थिक संधियाँ, और इससे स्थिति हल हो जाएगी। आपको उत्पत्ति की पुस्तक में याद होगा कि उत्पत्ति अध्याय 12 में, अब्राहम ने वादा किए गए देश में रहते हुए अकाल का अनुभव किया और वह कुछ समय के लिए मिस्र चले गए जब तक कि मौसम खत्म नहीं हो गया और फिर से बारिश का मौसम नहीं आ गया।

फिर आपको उत्पत्ति 42 में याद होगा कि याकूब का परिवार भोजन लाने के लिए मिस्र गया था, और इसलिए कई बार यह निर्भरता थी लेकिन यह काफी भयावह हो गई थी क्योंकि यह यहूदा के मामले में, हाल के इतिहास में, विदेशी ऊँटों के लिए यहूदा के तम्बू में अपना सिर घुसाने का एक अवसर था। और इसलिए, बहुत अधिक भावना है कि पिछली पीढ़ियों ने गलत किया था और उस पूर्व अनुभव में सड़ांध आ गई थी।

और इसलिए, धीरे-धीरे, विदेशी शक्तियों ने यहूदा पर अधिक से अधिक नियंत्रण प्राप्त कर लिया। पहले, यहूदा और अशशूर थे, और इसलिए अशशूर की जगह बेबीलोनिया ने ले ली, और अब वे पीड़ित थे, साम्राज्य का एक हिस्सा बेबीलोन के खिलाफ विद्रोह कर रहा था, और अब यरूशलेम नष्ट हो गया है, और सब कुछ खत्म हो गया है, लेकिन वह शुरुआती बिंदु, वह भयावह शुरुआती बिंदु, वे आर्थिक गठबंधन थे। पुराने नियम में अक्सर हम राजनीतिक गठबंधनों की इसी तरह की

अवधियों का संदर्भ पाते हैं। लेकिन यह बहुत संभव है कि आर्थिक गठबंधन और संधियाँ भी रही होंगी।

और इसलिए, यह श्लोक 7 में संक्षेप में कहा गया है, हमारे पूर्वजों ने पाप किया, वे अब नहीं रहे, वे मर चुके हैं, वे पूर्व पीढ़ियाँ जिन्होंने विदेशी शक्तियों के साथ उन समझौतों, आर्थिक समझौतों में प्रवेश किया, और हम उनके अधर्म को सहन करते हैं, देखें कि यह क्या हो गया है, यह पूरी स्थिति और यह इस भयानक तरीके से विकसित हुई है। देखें कि यह हमें अब कहाँ ले आया है। यह अंततः एक विदेशी शक्ति, बेबीलोन के उत्तराधिकारी असीरिया के अधीनता की ओर ले गया, इसलिए राष्ट्र के पिछले पापों ने वर्तमान पीढ़ी को जकड़ लिया। श्लोक 6 में, यह कहा गया है कि हमने अपने पूर्वजों के रूप में एक समझौता किया, और पीढ़ीगत एकजुटता का उल्लेख है; हम एक राष्ट्र के रूप में उस स्थिति में शामिल थे, हालाँकि अधिक सख्ती से पीढ़ीगत रूप से, यह हमारे पूर्वज, हमारे पूर्वज थे, जो इसमें शामिल थे, और उन्होंने कहा कि वे अब नहीं रहे और हम उनके अधर्म को सहन करते हैं।

अब, जब आप विलाप पर टिप्पणियाँ पढ़ते हैं, तो बहुत से टिप्पणीकार पद 7 के बारे में बहुत कुछ कहते हैं। वे जो करना चाहते हैं, वह पद 16 के साथ इसकी तुलना करना है, हमने पद 16 में पाप किया है लेकिन हमारे पूर्वजों ने पद 7 में पाप किया और वे यहाँ भ्रम देखना चाहते हैं, वे दो बिल्कुल अलग दृष्टिकोण देखना चाहते हैं जो एक दूसरे से सहमत नहीं हैं।

यहाँ एक पाठ है जो उनसे सहमत प्रतीत होता है, और जो टिप्पणीकार उस लाइन को लेते हैं वे यहजेकेल 18 और पद 2 का हवाला देते हैं। वहाँ यहजेकेल बेबीलोन में यहूदी निर्वासितों से जुड़ा हुआ है जो अपने निर्वासन से बहुत नाराज़ थे और कह रहे थे कि यह हमारी गलती नहीं है, यह पिछली पीढ़ियों की गलती है। यह उनकी गलती है, यह हमारी गलती नहीं है। उन्होंने क्या कहा, उनके पास एक कहावत थी, इसे संक्षेप में कहने का एक तरीका, "माता-पिता ने खट्टे अंगूर खाए हैं और बच्चों के दाँत खट्टे हो गए हैं।" यह उचित नहीं है, यह दृष्टिकोण है।

और इसलिए, वे कह रहे हैं कि यह हम नहीं हैं, यह पिछली पीढ़ियाँ हैं, माता-पिता ने खट्टे अंगूर खाए हैं और बच्चों के दाँत खट्टे हो गए हैं। हम रूपक बदल सकते हैं और कह सकते हैं कि माता-पिता नशे में थे, और हम बच्चे हैं गओवर से पीड़ित हैं। यह बिल्कुल उचित नहीं है और इसलिए यह बहुत ही सुंदर कहावत हो सकती है, क्या यह श्लोक 7 के अंतर्गत आती है, हम उनके अधर्म को सहन करते हैं, वे मर गए, वे बेदाग निकल गए और हम उनके अधर्म को सहन करते हैं और यह उचित नहीं है।

यह हम नहीं हैं जो पाप कर रहे थे। आह, लेकिन 16 कहता है, लेकिन हमने पाप किया, ठीक है यह अलग है, यह अलग है, और यहाँ भ्रम है। यहाँ इस बिंदु पर दो अलग-अलग दृष्टिकोण, दो अलग-अलग धार्मिक दृष्टिकोण हैं। नहीं, वास्तव में नहीं, क्योंकि पुराने नियम में कई मार्ग हैं जो एक श्रृंखला में दो लिंक के रूप में एक साथ रखना चाहते हैं, दोनों परिस्थितियों के सेट और मैं आपको उनमें से एक मार्ग का संदर्भ दूंगा।

भजन 79 और श्लोक 8 और 9, हमारे पूर्वजों के अधर्म को हमारे विरुद्ध स्मरण न कर, तेरी दया शीघ्र ही हम से मिलने आए, क्योंकि हम बहुत दीन हो गए हैं, ऐसा लगता है जैसे विलापगीत का श्लोक 7 ठीक है।

लेकिन यह कैसे होता है? हे परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के लिए हमें उद्धार दिलाने में हमारी सहायता करें, हमें छुड़ाएँ और अपने नाम के लिए हमारे पापों को क्षमा करें।

तो, यह नहीं कहा जा रहा है कि यह केवल पूर्वज थे, यह केवल पूर्वज थे जो पापी थे। यह एक साथ रखा गया है, इन दो चीजों को एक साथ रखा गया है, और वे दोनों अतीत और वर्तमान के अपराध की एक भयानक स्वीकारोक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

छंद 6 में एक दिलचस्प तथ्य है, हम पीढ़ी दर पीढ़ी एकजुटता में शामिल थे, हमने मिस्र और अश्शूर के साथ एक समझौता किया, हमने पर्याप्त रोटी पाने के लिए मिस्र और अश्शूर के सामने समर्पण किया, और ऐतिहासिक रूप से हमारे पूर्वजों ने यही किया था।

लेकिन यह हम थे। हम उस पीढ़ीगत एकजुटता में शामिल थे जो हमारे पास आई, और इसलिए यह है। मुझे नहीं लगता कि हमें श्लोक 7 और 16 के बीच किसी भी तरह से भ्रमित करने वाला अंतर करना चाहिए। लेकिन हम अध्याय 5 के पहले भाग के अंत में आ गए हैं, और यह दुःख से निपट रहा है, यह शिकायत से निपट रहा है, और उस अंतिम श्लोक में, वास्तव में अंतिम दो श्लोक 6 और 7 में, यह अपराध बोध से निपट रहा है।

अगली बार हमें श्लोक 8 से 16 तक जाना चाहिए।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा विलाप की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 12, विलाप 5:1-7 है।